Contents

अनुक्रमणिकाः

प्रथम अध्याय : विषयप्रवेश :

प्रास्ताविक--पश्चिम में उपन्यास का विकास--भारतीय भाषाओं से उपन्यास का विकास--हिन्दी उपन्यास की विकास--यात्रा-नगर तथा महानगर--महानगरों का निर्माण--महानगरीय जीवन की समस्याएँ--महानगरीय जीवन की सुविधाएँ--महानगरीय जीवन की दुविधाएँ--निष्कर्ष--संदर्भानुक्रम।

द्वितीय अध्याय : महानगरीय उपन्यासों का आलोचनात्म परिचय :

लगभग २५-३० महानगरीय परिवेश संपृक्त उपन्यासों का अनुशीलन। (रूपरेखा-Synopsis पृ.६-७ पर उपन्यासों के नामों का उल्लेख किया गया है।) --निष्कर्ष--संदर्भानुक्रम।

तृतीय अध्याय : महानगरीय परिवेश : दाम्पत्य-जीवन की समस्याएँ :

प्रास्ताविक--परिवार विषयक विभावना का संकुचित होना--संयुक्त परिवारों का टूटना--युग्मक-परिवार--एकक परिवार--दाम्पत्य सुख से वंचित नारियाँ--प्रेमहीन समाज--मूल्यविघटन--पति-पत्नी के दाम्पत्य जीवन में तीसरे व्यक्ति का प्रवेश --व्यक्ति का ईगो (Ego) और उसके कारण टूटता-भहराता दाम्पत्य--खंडित दाम्पत्य के कारण बच्चों की दयनीय स्थिति--विभिन्न स्तरों पर दाम्पत्य की स्थिति--निष्कर्ष--संदर्भानुक्रम।

चतुर्थ अध्याय : महानगरीय परिवेश में कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ :

प्रास्ताविक--कामकाजी महिलाओं की अवधारणा--कामकाजी किसे कहा जाए ?--गृहकार्य और बाहरी कार्य--बाहरी कार्य के विभिन्न संस्तरण--कामकाजी महिलाओं के विभिन्न स्तर--निम्न स्तर--मध्य स्तर--उच्च स्तर--तीनों स्तर की विभिन्न स्थैतिक गतिविधियाँ--गृह-परिवार की स्थिति--पुरूष के अहं (Ego) की स्थिति--दोहरा उत्तरदायित्व--तनाव--दाम्पत्य पर असर--स्त्रियों का मानसिक-लैंगिक शोषण--

कामकाजी महिला और यौन-उन्मुक्तता--अविवाहित रहने के लिए अभिशप्त कामकाजी महिला--स्वेच्छा से अविवाह का वरण करनेवाली कामकाजी महिलाएँ--कामकाजी महिलाओं के विवाहेतर संबंध--कामकाजी महिलाओं के ईगो(Ego) का प्रश्न--कामकाजी महिला और रूढ़िमुक्तता--कामकाजी महिलाओं की कार्यप्रतिश्रुतता --निष्कर्ष--संदर्भानुक्रम।

पंचम अध्याय : महानगरीय परिवेश और मानसिक दबाव :

प्रास्ताविक--युग्मक और उनके परिवार का व्यक्ति-जीवन पर असर--असुरक्षा की भावना--संवेदना का भोंथरापन--निरन्तर भागती-दौड़ती जिंदगी--अतिव्यस्तता--तनावग्रस्त माता-पिता और पीड़ित संतान---मूल्यों का विघटन---माता-पिता की स्वार्थान्धता--नानाप्रकार के प्रदूषण--निवास की समस्या--बच्चों की शिक्षा की समस्या--कोमी दंगे--माफिया डोनों का मानसिकत्रास--शैक्षिकसंस्थानों में हो रही आर्थिक शोषण--निष्कर्ष--संदर्भानुक्रम।

षष्ठ अध्याय : महानगरीय परिवेश : अजनबीपन (एलीनियेशन): और अन्य समस्याएँ :

प्रास्ताविक--अजनबीपन की अवधारणा--विवेच्य उपन्यासों में अजनबीपन का भाव--भौतिकता बढ़ता आग्रह--चीजपरस्ती--टूटते-भहराते पारिवारिक संबंध--टूटते-भहराते मानवीय संबंध--स्वार्थान्धता--स्वेकेन्द्रीयता--मनुष्य का ''रोबोट''होते जाना--अलगाव की भावना--संबंधों की उष्मा का ठण्डापन--पारिवारिक अलाव--वैयक्तिक अलगाव--बौद्धिक अलगाव--''अनफिट''की समस्या--अकेलेपन की यंत्रणा--निष्कर्ष--संदर्भानुक्रम।

सप्तम अध्याय : उपसंहार :

समग्रावलोकन पर आधारित निष्कर्ष--विषय का महत्व--उपलब्धियाँ--भविष्यत् संभावनाएँ।

सन्दर्भिका :

(१) परिशिष्ट - स : उपजीव्य ग्रन्थ

(२) परिशिष्ट - र : सहायकग्रन्थों की सूची (हिन्दी)

(३) परिशिष्ट - ग : सहायक ग्रन्थों की सूची (अंग्रेजी)

(४) परिशिष्ट - म : पत्र-पत्रिकाएँ

oo